ISSN -PRINT-2231-3613ONLINE2455-8729
International Educational Journal
UGC APPROVAL NO. - 42652
CHETANA

Received on 29th Oct 2017, **Revised** on 07th Nov. 2017; **Accepted** 30th Nov. 2017

आलेख

भारत की सुरक्षा एवं रोहिंग्या शरणार्थी

* मानसिंह, शोधार्थी
राजनीति विज्ञान विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर
Email-man.singh1190@gmail.com, Mobile - 8949312507

मुख्य शब्द *– मानवाधिकारवादी, नागरिकता कानून, ओपनिवेशिक शासन, रोहिंग्या, धर्मावलम्बी आदि।*

भारत सदैव ही सीमाओं पर असुरक्षित रहा हैं, चाहे फिर सीमा विवाद हो या फिर शरणार्थियों व अवैध प्रवास की समस्या। जो लोग किसी देश के नागरिक नहीं होते, उनके लिए मानवाधिकारवादी संगठनों द्वारा आन्दोलन चलाकर उन्हें नागरिकता प्रदान की जानी चाहिए। हम आपको बता दे कि जो रोहिंग्या मुसलमान हैं उनका जन्म म्यांमार में हुआ हैं वे वहाँ तीसरी व चौथी पीढ़ी के नागरिक हैं मगर उनके पास नागरिकता नहीं है बर्मा के 1982 के नागरिकता कानून के तहत उन्हें नागरिकता के अधिकार से वंचित कर दिया गया है। म्यांमार में बिना नागरिकता के लोगों की संख्या सर्वाधिक हैं ऐसे में इसका कोई मैत्रीपूर्ण हल निकाला जाये। भारत और म्यांमार के बीच ऐतिहासिक संबंध पांचवी शताब्दी से है और तभी से उनके बीच व्यापार, वाणिज्य, धर्म, कानून, राजनीतिक दर्शन और संस्कृति के क्षेत्र में परस्पर संपर्क कायम रहा हैं। दोनों देश ब्रिटिश ओपनिवेशिक शासन के अधीन रहे और बर्मा के नेतागण राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान भारतीय नेताओं के सहयोगी रहे। पंडित नेहरू और यू नू के बीच व्यक्तिगत मित्रता भारत म्यांमार के बीच सौहार्दपूर्ण संबंधों के विकास का आधार बने।

रोहिंग्या मुसलमान एक परिचय

विश्व में रोहिंग्या मुसलमान एक ऐसा अल्पसंख्यक समुदाय हैं जिस पर सबसे ज्यादा अत्याचार हो रहे हैं। आज रोहिंग्या दर–दर की ठोकरे खाते फिर रहे हैं अपना प्रवास खोजने के लिए वे विश्व के देशों में भटकते फिर रहे है। रोहिंग्या मुसलिम शरणार्थी बर्मा, जिसे अब म्यांमार के नाम से जाना जाता है, के उत्तरी राज्य रखाइन के मूल निवासी है। म्यांमार में मुख्यतः बौद्ध धर्मावलम्बी बहुसंख्यक हैं जबकि रोहिंग्या अल्पसंख्यक हैं। इन दोनों जातियों के बीच संघर्ष का इतिहास बहुत पुराना है लेकिन वर्तमान दशक में इसने उग्र रूप धारण कर पुरे विश्व के सामने असुरक्षा का अभाव पैदा कर दिया है। अब तक म्यांमार से लगभग 140000 रोहिंग्या मुसलमान विस्थापित हो चुके हैं जो विश्व के विभिन्न देशों इण्डोनेशिया, भारत, नेपाल, बांग्लादेश, मलेशिया, थाइलैण्ड आदि देशों में भटकते फिर रहे है।

बीते वर्ष से लेकर अब तक लगभग 35 हजार से अधिक रोहिंग्या शरणार्थियों ने भारत के विभिन्न राज्यों जम्मू–कश्मीर, असम, पश्चिम बंगाल, केरल, आंध्रप्रदेश, उत्तरप्रदेश, दिल्ली सहित विभिन्न राज्यों में अवैध रूप से रह रहे है। भारत में अवैध रूप से रह रहे रोहिंग्या मुसलमान शरणार्थियों की सबसे ज्यादा संख्या जम्मू–कश्मीर

में एक सर्वे के मुताबिक जम्मू में लगभग 5700 अवैध रोहिंग्या शरणार्थी रह रहे हैं। म्यांमार में एक अनुमान के मुताबिक रोहिंग्या मुसलमानों की संख्या तकरीबन 10 लाख है और म्यांमार सरकार द्वारा इस बात का दावा किया जाता है कि ये जाति बांग्लादेश की अवैध प्रवासी है। अतः इसे म्यामांर नागरिकता नहीं दे सकता फिर सवाल ये उठता है कि बांग्लादेश सरकार इन्हें नागरिकता क्यों नही दे रही है। हालिया दशक में इस जाति के 90 फिसदी घरों को जलाकर नष्ट कर दिया व उन्हे देश से निकाल दिया गया। इनमें से लगभग 20 हजार रोहिंग्या शरणार्थी बांग्लादेश में शरण लिए हुये है। म्यांमार की सरकार इस बारे में कोई एक्शन नहीं लेती नजर आ रही है बल्कि उल्टा रोहिंग्या मुसलमानों पर ही आरोप लगा रही है कि इन्होंने म्यांमार में शान्ति व्यवस्था के लिए खतरा पैदा किए हुए है। म्यांमार में इस समुदाय पर हर प्रकार की रोक लगी हुई है ये ना तो कही आ जा सकते है और ना ही कोई काम धन्धा कर सकते है ऐसे में इनके सामने रोजी रोटी की समस्या बनी हुई है। म्यांमार सरकार और बौद्व लोगो पर हमेशा से ही इन्हे प्रताड़ित करने के आरोप लगते रहे है। ऐसे में ये कहाँ जाए, कोन इन्हे नागरिकता दे, म्यांमार सरकार तो इन्हें केवल बांग्लादेशी अवैध प्रवासी मानती है।

बांग्लादेशी सरकार को रोहिंग्या मुस्लिमों से आपत्ति

विश्व के अन्य देशों की भांति बांग्लादेशी सरकार का रूख भी रोहिंग्यों के प्रति सख्त दिखाई दे रहा है। वर्तमान में बांग्लादेश में 5 लाख तक की संख्या में रोहिंग्या अवैध रूप से प्रवास कर रहे है। बांग्लोदश में प्रवास का ये दौर 1990 के दशक से ही चल रहा है। ऐसे में बांग्लादेशी सरकार का रूख रोहिंग्या मुसलमानों के प्रति कठोर है क्योंकि बांग्लादेश की आर्थिक स्थिति इतनी ठीक नहीं है कि वो इस अवैध प्रवास का दंश झेल सकें। म्यांमार में रोहिंग्या मुसलमानों से उपजी नस्लीय हिंसा की वजह से हिन्दू और कुछ बौद्व भी वहां से पलापन कर रहे है। हाल ही में मानवाधिकार आयोग ने रोहिंग्या जाति के घरों को जलाने व हिंसा की 700 से ज्यादा तस्वीरे पेश की है। म्यांमार की सरकार का दावा है कि रोहिंग्या मुख्य रूप से अवैध बांग्लादेशी प्रवासी है जबकि ये पीढ़ीयों से म्यांमार में रह रहे है। म्यांमार से निष्कासित लाखों शरणार्थी जो बांग्लादेश में रह रह है बांग्लादेशी सरकार का रैवया उनके प्रति ठिक नही है। आये दिन बड़े पैमाने पर भेदभाव व दुर्व्यवहार का सामना उन्हे करना पड़ रहा है। बांग्लादेश से बड़ी संख्या में शरणार्थीयों को वापस म्यांमार भेजा जा रहा है। बांग्लादेश सरकार बार्डर सील कर रखा है ताकि सीमा पार करने वालो की जांच कर वापस भेजा जा सके।

रोहिंग्या अत्याचार का दोष किसे?

म्यांमार वर्षों से लोकतंत्र के लिए संघर्षरत देश रहा है वहां पर 25 सालो बाद चुनाव हुए है चुनावों में नोबल विजेता आंग सान सू ची की पार्टी नेशनल लीग फोर डेमोक्रेशी को भारी जीत हासिल हुई पर आंग सान सू ची राष्ट्रपति नहीं बन पाई। लेकिन आंग सान सू ची अपने राष्ट्र की वास्तविक नेता है। म्यांमार की सुरक्षा कमाण्ड देश की सुरक्षा आर्म्ड फोर्स के हाथों में है। रोहिंग्या मुसलमानों को लेकर आंग सान सू ची पुरी तरह चुप है न तो वे कोई टिप्पणी कर रही है और ना ही इस सम्बन्ध में कोई निर्णय ले रही है। आन्तरिक दबाव के चलते आंग सान सू ची का बयान आया है कि म्यांमार में जो कुछ हो रहा है वो ''रूल ऑफ लॉ'' के तहत हो रहा है इस विवादित बयान को लेकर अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विवादों का सामना उन्हें करना पड़ा है। आंग सान सू ची की रोहिंग्या के प्रति सहानुभूति न के बराबर है। रोहिंगाओं के खिलाफ वहाँ की जनता व आर्मी जमकर म्यांमार सरकार का सहयोग कर रही है।

म्यांमार में सबसे बड़े जातिय समूह बर्मन के लोगों का प्रभुत्व है। म्यांमार को अब तक सैन्य शासन व आंग सान सू ची को लगातार संघर्ष के कारण ही जाना जाता है। लेकिन चुनावों के बाद सत्ता हस्तान्तरण के तुरन्त बाद अल्पसंख्यक समूह रोहिंग्या मुसलमानों का मुद्दा उठ खड़ा हुआ है। जनवरी 2009 में थाईलैण्ड ने अपने तह पर पहुचे सैकड़ो रोहिंग्या मुसलमानों को वापस भेज दिया, लेकिन म्यांमार ने अपने यहां अल्पसंख्यकों के अस्तित्व को नकार दिया, कई रोहिंग्या मुसलमानों को इंडोनेशिया के समुंद्र तट पर नावो से बचाया गया। आखिर रोहिंग्या जाति पर हो रहे अत्याचार की वजह से चाहे जो भी है पर इसकी शुरूआत सबसे पहले यौन उत्पीड़न और स्थानीय विवादों ने रोहिंग्या और दूसरे बहुसंख्यक समुदाय के बीच हिंसा की शुरूआत हो चूकी जिसने बाद में साम्प्रदायिकता का रूप ले लिया। सबसे बड़ी हिंसा जून, 2012 में हुई जिसमें रखाइन के बौद्धों और मुस्लिमों के बीच दंगे हुए जिसमें सैकड़ो मुसलमानों की मौत व हजारों को दर–बदर की ठोकरें खाने को विवश होना पड़ा, इस घटना की शुरूआत एक युवा बौद्ध महिला की हत्या व बलात्कार की घटना से हुई। म्यांमार का बौद्ध समाज इस हिंसा व नर संहार का दोषी रोहिंग्याओं को मानता है। संयुक्त राष्ट्र संघ ने रोहिंग्याओं को दुनिया के सबसे अधिक सताये गये अल्पसंख्यकों का दर्जा दिया है।

रोहिंग्या मुसलमानों के प्रति भारत सरकार का रैवया

पिछले कुछ सालो से भारत में अवैध रूप से रह रहे रोहिंग्या मुसलमान अपने भविष्य को लेकर काफी चिंतित है। जम्मू के बाहरी इलाकों में छोटे समूहों में रह रहे रोहिंग्या मुसलमानों को जब पता चला कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की अगुवाई वाली केन्द्र सरकार द्वारा विभिन्न राज्यों में रह रहे अवैध रूप से रोहिंग्या मुसलमानों को निर्वासित किया जायेगा। म्यांमार व बांग्लादेश में तो पहले ही इन पर जुल्म अत्याचारों की इन्तहा हो चूकी है।

रोहिंग्या इस समय बिना राष्ट्र के है, न उन्हे म्यांमार स्वीकार करता है न बांग्लादेश और ना ही कोई मानवाधिकार संगठन इस दिशा में आगे आया है। वैसे हम आपको बता दे कि रोहिंग्या मुसलमानों का मुद्दा भारत में भी कोर्ट तक पहुच चूका है। जिस पर सरकार को अपना बयान पेश किया जाना बाकि है। हालिया प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की म्यांमार यात्रा से पहले यह साफ कर दिया गया कि भारत सरकार रोहिंग्याओं को किसी भी सुरत में अपने यहां शरण नहीं देगी। भारत सरकार के गृह मंत्रालय द्वारा ये स्पष्ट किया जा चुका है कि भारत रोहिंग्याओं को निर्वासित करेगा क्योंकि भारत में साम्प्रदायिकता व सद्भावना के लिए खतरा पैदा हो सकता है। एक आकलन के मुताबिक भारत में अवैध रूप से लगभग 50000 रोहिंग्या शरण लिए हुए है। भारत में ये समस्या स्वतंत्रता के बाद से बनी हुई है कभी बांग्लादेशी, नेपाली, तमिलों के अवैध प्रवास का दंश भारत झेल चूका है।

यद्यपि भारतीय मुस्लिम समाज रोहिंग्याओं के प्रति लगाव रखता है यह भारत के लिए और भी घातक हो सकता है। जब कभी मुस्लिमों की सोच को लेकर बात आती है तो म्यांमार के राष्ट्रवादी व कट्टर बौद्ध मोदी व भारत सरकार को अपने साथ खड़ा पाते है भारत म्यांमार में चल रहे सैन्य अभियानों में भी रोहिंग्या चरमपंथियों के खिलाफ अभियान में हिस्सा ले चूका है ऐसे में भारतीय मुसलमान सरकार के इस रैवये का पुरजौर विरोध करने पर तुले है। भारत के कई इलाकों में बसे रोहिंग्या मुसलमान वापस नहीं लौटने का मन बना चूके है वे इस बारे में कई बार सरकार से भावात्मक अपील भी कर चूके है।

रोहिंग्या भारत की सुरक्षा के लिए खतरा

वर्तमान सरकार ने अपना पक्ष रखते हुए कहा है कि रोहिंग्या मुसलमान राष्ट्र की एकता व अखण्डता के लिए चुनौती बने हुए है सरकार ने स्पष्ट कर दिया है कि सरकार ने उन्हे निर्वासित करने का फैसला किया है जिसकी चारों तरफ आलोचनाएं की जा रही है। भारत वर्ष में अवैध रूप से रह रहे रोहिंग्याओं ने सरकार के इस फैसले को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी है ये वे लोग है जो तकरीबन पांच–छह साल पहले भागकर भारत आये थे। म्यांमार की सरकार भी इनके खिलाफ ऐसी सख्ती अपना रही है जिसे विश्व समूदाय द्वारा जातीय सफाये की संख्या दी जा रही है। फिर भी भारत सरकार अपनी सुरक्षा को लेकर काफी चिन्तित लग रही है। भारत सरकार को इस बात का डर है कि रोहिंग्या मुसलमानों के नेता पाकिस्तान से चलने वाले आंतकवादी संगठनों के सम्पर्क में है। सुप्रीम कोर्ट में जारी सरकार के इस फैसले को चुनौती देने के बाद बहरहाल कोर्ट ने अगले आदेश तक इनके निर्वासन पर रोक लगा दी है।

केन्द्र की मोदी सरकार रोहिंग्या मुसलमानों की समस्या से जल्द निदान पाने के मूड में है। एक रिपोर्ट के मुताबिक, गृह मंत्रालय फॉरनर्स एक्ट के तहत् इन लोगों को गिरफ्तार कर वापस म्यांमार भेजा जायेगा। ये लोग भारत के समुंद्री मार्गों से देश के कोने–कोने में फैल चुके है। सबसे ज्यादा रोहिंग्या जम्मू में बसे है। एक रिपोर्ट के मुताबिक अकेले जम्मू में इनकी संख्या 10000 तक पहुँच चूकी है वैसे भी जम्मू के मौजूदा हालातों में हिन्दू पंडित कश्मीर में अपने घरों में वापस नहीं लौट पा रहे है ऐसे में रोहिंग्या शरणार्थीयों को कैसे आश्रय मिल सकता है। विभिन्न आंतकवादी संगठन लश्कर–ए–तैयबा, अलकायदा, अका–मल–मुजाहिदीन जैसे जिहादी संगठन रोहिंग्या मुसलमानों के साथ लम्बे से सक्रिय है ऐसे में भारत का चिंतित होना स्वभाविक है।

संदर्भ

1. Mahmood; Wroe; Fuller; Leaning (2016). "The Rohingya people of Myanmar: health, human rights, and identity". *Lancet*: 1–10. doi:10.1016/S0140-6736(16)00646-2. PMID 27916235.
2. David Mathieson (2009). *Perilous Plight: Burma's Rohingya Take to the Seas*. Human Rights Watch. Page No.-3. ISBN, 9781564324856.
3. http://www.thedailystar.net/world/rohingya-crisis/400000-rohingyas-myanmar-arrive-bangladesh-august-25-unicef-1462066
4. Sarah Wildman (29 September, 2017). "Half of Myanmar's Rohingya minority has fled the country". *Vox*.
5. "Saudi Arabia entry at Ethnologue". Ethnologue, 6 February 2015.
6. "Homeless In Karachi | Owais Tohid, Arshad Mahmud". Outlook India. 29 November 1995. 18 October 2013.
7. "Box 5925 Annapolis, MD 21403 info@srintl". Burmalibrary.org, 18 October 2013.
8. Derek Henry Flood (31 December 1969). "From South to South: Refugees as Migrants: The Rohingya in Pakistan". The Huffington Post, 11 February 2015.
9. Husain, Irfan (30 July 2012). "Karma and killings in Myanmar". *Dawn*, 10 August 2012.

10. "Figure At A Glance". UNHCR Malaysia. 2014. Archived from the original on 30 December 2014, 30 December 2014.
11. "India in talks with Myanmar, Bangladesh to deport 40,000 Rohingya". *Reuters*. 2017, 17 August 2017.
12. "India plans to deport thousands of Rohingya refugees". *www.aljazeera.com*. 17 August 2017.
13. Timothy Mclaughlin (20 September 2016). "Myanmar refugees, including Muslim Rohingya, outpace Syrian arrivals in U.S."(English). Reuters.
14. Jalimin (19 May 2015). "Jumlah Pengungsi Rohingya di Indonesia Capai 11.941 Orang" (Indonesian). Aceh Tribun News. Archived from the original on 11 October 2015
15. "200 Rohingya Refugees are not being accepted as Refugees and the Nepali Government considers them illegal migrants". Archived from the original on 4 June 2016. "An estimated 36,000 Rohingya Refugess living in India"
16. Colin Clarke; Ceri Peach; Steven Vertovec (26 October 1990). *South Asians Overseas: Migration and Ethnicity*. Cambridge University Press. p.-46. ISBN- 978-0-521-37543-6.
17. British Foreign Office (December 1952). "On The Mujahid Revolt in Arakan". National Archives.
18. "Will anyone help the Rohingya people?". BBC News. 10 June 2015.
19. "There were at least a million members of the Rohingya ethnic group living in Myanmar, most of them Muslim, though some are Hindu." http://www.bbc.com/news/world-asia-41260767
20. Jacob Judah (2 September 2017). "Thousands of Rohingya flee Myanmar amid tales of ethnic cleansing". *The Observer*.
21. "Hindus too fleeing persecution in Myanmar". *Daily Star*. 31 August 2017.
22. "Hindus From Myanmar Join Muslim Rohingyas in Seeking Refuge in Bangladesh". The Wire.
23. Andrew Simpson (2007). *Language and National Identity in Asia*. United Kingdom: Oxford University Press. p.- 267. ISBN - 978-0199226481.
24. "Rohingya reference at Ethnologue".
25. "Myanmar Buddhists seek tougher action against Rohingya". *The Washington Post*.

**** Corresponding Author:***
मानसिंह, शोधार्थी
राजनीति विज्ञान विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर
Email-man.singh1190@gmail.com, Mobile - 8949312507